मोक्ष मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां, वन्दे तद् गुणलब्धये ॥

आज यह तत्त्वार्थ सूत्र के दशम अध्याय में आचार्य उमास्वामी महाराज के द्वारा मोक्ष तत्त्व का वर्णन करने वाले कुछ सूत्रों की रचना की गयी है। मोक्ष का वर्णन संवर और निर्जरा से हो कर के होता है। यद्यपि सात तत्त्व जो आत्मा के अन्दर घटित होते हैं, उनमें...सात तत्त्वों में जीव और अजीव तत्त्व का संयोग होने पर आस्रव और बंध जो चलता रहता है, यह आस्रव और बंध की प्रक्रिया ही संसार को बनाये रखने का कारण बन जाती है। इसलिए इन सात तत्त्वों में अगर विचार किया जाए तो यह आस्रव और बंध दो तत्त्व हमारे लिए संसार वृद्धि के कारण दिखते हैं। संसार को रोकने का और संसार से मुक्त होने का जहाँ से प्रक्रम प्रारम्भ होता है, वह संवर और निर्जरा तत्त्व है। निर्जरा कर्मों की एक देश झड़ने को कहते हैं। एक देश मतलब कर्म झड़ तो रहा है लेकिन पूरा अपना अस्तित्व समाप्त करके नहीं झड़ रहा है। जितना नष्ट होता है, झड़ता है...उससे भी ज्यादा वह बना रहता है, फिर भी वह झड़ता रहता है, इसको निर्जरा कहा जाता है। निर्जरा में कर्मों का क्षय, विनाश नहीं होता और यदि होता है तो वह थोड़ा-थोड़ा होता है, उस को निर्जरा कहते हैं। जब कर्म का विनाश पूर्णतया हो जाता है, आत्मा में उसका सत्व किसी भी रूप में नहीं रहता तो उसको क्षय कहा जाता है। कर्म का क्षय होना यह महत्वपूर्ण होता है। निर्जरा के साथ साथ कर्म सत्व बना रह सकता है, लेकिन क्षय होने पर कर्म का सत्व हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है।

पुण्यास्त्रव मोक्ष में बाधक नहीं

जीवन मुक्त होने के बाद ही वह शेष बचे हुए कर्मों से मुक्त होता हुआ, वह भव से यानी संसार से मुक्त हो जाता है। यही प्रक्रिया यहाँ पर बताई जा रही है कि जो संवर था, निर्जरा हुई थी और उस संवर, निर्जरा से पहले भी उसने अनेक तरह के पुण्यास्त्रव भी किए थे, पुण्य बन्ध भी किए थे और उन सब पुण्य बन्धों का लाभ उसे इस तरह से मिलता रहा कि वह कोई भी पुण्यास्त्रव, पुण्य बन्ध उसके लिए बाधक नहीं बने। सम्यग्दृष्टि जीव के लिए जो भी व्रत, संयम, नियम, समितियाँ, गुप्तियाँ इन सब चीजों से जो पुण्य का आस्त्रव होता है वह कभी भी उसके लिए मोक्षमार्ग में बाधक नहीं होता है। उन्हीं की सहायता से वह आगे-आगे बढ़ता चला जाता है, विशुद्धि को बढ़ाता चला जाता है।

पुण्य कर्म निर्जरा का हेतु है

कर्म का कोई भी बन्ध जो पाप का हो या पुण्य का हो...यदि व्यक्ति पुरुषार्थ करना प्रारम्भ कर देता है तो उसके लिए किसी भी तरह के कर्म का बन्ध उसके लिए कोई भी रास्ते में बाधक नहीं बनता। जब पाप कर्म को भी जीतने की शक्ति आ जाती है, पाप कर्म भी जब बाधक नहीं बनता है तो फिर पुण्य कर्म तो बाधक बन ही नहीं सकता। वह पुण्य भी उस जीव के लिए निरन्तर आगे-आगे की विशुद्धि को बढ़ाने के लिए, ध्यान आदि की सामग्रियाँ उसे उपलब्ध कराने के लिए और तरह-तरह से उसे कर्म निर्जरा के साधन प्रदान करने के लिए उसकी help करता रहता है। इसलिए हर आत्मा के अन्दर जब भी कभी इस तरह का पुरुषार्थ करने का भाव आएगा तो उसे पुण्यास्त्रव को भी साथ में लेना ही पड़ेगा। पुण्यास्त्रव को सर्वथा हेय कह कर के यदि आप पुण्य से बचने की कोशिश करेंगे तो यह आपकी बहुत बड़ी अज्ञानता होगी क्योंकि जो भी आपने सातवें अध्याय में और छठवें अध्याय में भावों का वर्णन सुना है और सातवें अध्याय में जो आपने व्रतों का वर्णन सुना है, उस व्रत को प्राप्त किए बिना, उस पुण्यास्त्रव को प्राप्त किए बिना कभी भी गुप्तियाँ, समितियाँ रूप जो नौवें अध्याय में आपने संवर के साधन सुने थे, वे कभी भी उपलब्ध नहीं होते हैं।

ध्यान अवस्था में पुण्य कर्मों का क्षय स्वतः ही होता है

अपने मन के अन्दर से यह जो आजकल जमाने में बहुत बड़ी भटकन चल रही है...पुण्य को हेय कहना, पुण्यास्त्रव के कारणों से बचना, शुभ भाव पुण्य का कारण होता है और उस पुण्य के कारण से बन्ध होता है, आत्मा कभी मुक्त नहीं होती है...ऐसा कुछ लोग बहुत सारा ज्ञान पिलाते रहते हैं। आपको इस तरह के ज्ञान से बचना चाहिए। अगर आपने पूरा तत्त्वार्थ सूत्र पढ़ लिया है तो आपको अब यहाँ पर देखने को मिलेगा कि कर्मों का क्षय जब किया जाता है तो ध्यान अवस्था में सभी कर्मों का क्षय अपने आप होता है। शुभ-अशुभ सभी प्रकार के कर्म के क्षय कोई भी अपनी बुद्धिपूर्वक नहीं करता किन्तु जितना काम बुद्धि पूर्वक करने योग्य है उतना कर लेने के बाद में जब अरिहन्त दशा प्राप्त हो जाती है उसके बाद में बहुत से पुण्य कर्मों का क्षय भी चूँकि उसे मोक्ष जाना है तो अपने आप स्वतः हो जाता है। वह पुण्य कर्मों का क्षय करने के लिए केवल अरिहन्त दशा ही काम की है, अरिहन्त दशा में ही पुण्य का अभाव होकर के मोक्ष होता है। कभी भी कोई श्रावक या साधु पुण्य का क्षय करके केवलज्ञान प्राप्त नहीं करता है।

अज्ञानता से बचे

यह जो अज्ञान आप लोगों के अन्दर भरा जाता है, इस अज्ञान से आप बचने की कोशिश करें…कि पुण्य शुभ व्रतों के माध्यम से मिलता है, शुभ भावों के माध्यम से मिलता है और शुभ भाव व्रत के माध्यम से आते हैं इसलिए व्रत से केवल शुभ भाव होता है...शुभ भाव बन्ध का कारण है, बन्ध संसार का कारण है, ऐसा जो उल्टा पाठ पढ़ाया जाता है वह आप अब थोड़ा-सा इतना तत्त्वार्थ सूत्र सीखने के बाद समझ ले कि अगर हमें मोक्ष की प्राप्ति के लिए कोई भी कारण नहीं मिलेंगे, अपने ही बन्धों को तोड़ने के हम खुद भी उपाय नहीं करेंगे तो बन्ध कभी भी अपने आप नहीं टूटते हैं।

पुरुषार्थ बिना कर्म निर्जरा असम्भव

यहाँ कोई ऐसा तीर्थंकर या भगवान नहीं है, न जिनवाणी की कोई ऐसी शक्ति है, न कुछ भी ऐसी किसी भी गुरु के पास शक्ति है जो आपके कर्म बन्ध को आपके ही अन्दर बैठे-बैठे कोई तोड़ दे। यह सब पुरुषार्थ की चीजें हैं, पुरुषार्थ करना होता है। पुरुषार्थ करने के लिए जिस तरह की विधि बताई है उसी विधि से चलेंगे तो ही कुछ उपलब्ध होगा अन्यथा आप बातें तो करेंगे, उपलब्ध कुछ नहीं होगा क्योंकि ये सभी हथियार हैं। कर्म को नाश करने के लिए ये सब क्या हैं? अस्त्र हैं, शस्त्र हैं, हथियार हैं...इस कर्म की सेना को नष्ट करने के लिए इस तरह के हथियार आपको धारण करने ही पड़ेंगे। जो कर्म मोह को नाश करने के लिए बताए गए हैं, उनकी शुरुआत व्रतों के माध्यम से ही होती है। बिना व्रत के कभी समितियाँ नहीं हो सकती, समितियों के बिना कभी गुप्ति नहीं हो सकती, कोई चारित्र नहीं हो सकता। आप क्या बैठे-बैठे, बातें करते-करते मोक्ष प्राप्त करेंगे? ये सब चीजें आपको सीख लेना है कि तत्त्वार्थ सूत्र में जितना भी process बताया गया है वह सैद्धान्तिक है। जीव का सिद्धान्त बताते हुए जीव के अन्दर कैसे सम्यग्दर्शन प्राप्त होता है? जीव के अन्दर कितने ज्ञान होते हैं? यह सब पहले अध्याय में बताने के बाद में अन्य अध्यायों में जीव कहाँ-कहाँ घूमता है? यह सब बताने के बाद में वास्तव में जो चीज मोक्ष की शुरू होती है, वह सातवें अध्याय से शुरू होती है।

विरति से विरक्ति मत करो

सातवाँ अध्याय यानी कि जहाँ पर हमें मुख्य रूप से कैसे अपनी विरति को प्राप्त करना? **'विरतिर्व्रतम्'** कहा गया...किससे विरति? हिंसा, अनृत आदि इन चीजों से विरति। अब इस विरति को किए बिना कभी भी, इस विरक्ति को किए बिना कभी भी आपके अन्दर संसार से विरक्ति होने वाली नहीं है। जहाँ से विरक्ति शुरू होती है, वहीं पर अगर हम अन्यथा बातें करके, उसको अगर हम गलत सिद्ध करके और हम उस विरति से ही विरति करेंगे तो फिर आप संसार में ही घूमेंगे। बहुत से लोग अध्यात्म का ज्ञान पिला करके विरति से ही विरति कराते हैं, विरति को नहीं होने देते हैं। जो सातवाँ अध्याय जहाँ से शुरू होता है...**'हिंसानृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम्'** बस यहीं पर आकर के question mark खड़ा कर देते हैं। विरति का मतलब तो व्रत हो गया। व्रत है तो शुभ भाव है, शुभ भाव है तो बन्ध का कारण है...बन्ध है तो संसार का कारण है, ऐसा ज्ञान पिला-पिला करके लोगों को विरत नहीं होने देते। इस तरीके की जो अज्ञानता फैलाते हैं, उनके लिए यह ज्ञान रखना जरुरी है कि यह आप जिनवाणी के साथ में बहुत बड़ा अवर्णवाद कर रहें हैं...वाणी का यह अपलाप है।

व्रतों से ही कर्म निर्जरा की शुरुआत होती है

जो process बताया गया है, उस process से चलोगे तभी विरति होगी। विरति होगी तभी आपके लिए कभी गुप्तियाँ मिलेंगी। गुप्तियों के माध्यम से ही जो है, सामायिक जो चारित्र है, उसमें प्रवृत्ति होगी। इस तरह से जब चारित्र

होगा तो ही आपके लिए तप के माध्यम से कोई निर्जरा का साधन बनेगा। अतः बिना चारित्र के, बिना तप के, बिना व्रत के यह सब कभी भी सम्भव नहीं है तो व्रत से शुरुआत होती है। सातवाँ अध्याय ही हमारे लिए प्रशस्त रूप मार्ग पर चलने की एक शुरुआत कर देता है। सातवें अध्याय में दिए गए व्रतों का जो पालन करता है, उस व्रत के पालन से उसके अन्दर जब इतना पुण्य आ जाता है, इतनी योग्यता आ जाती है कि वह फिर जो नौवें अध्याय में कहा गया है...**'उत्तम संहननस्यैकाग्र चिंतानिरोधो ध्यानमांतर्मुहूर्तात्'** यह सब उसकी योग्यता यहाँ तक प्राप्त करने के लिए उसे सातवें अध्याय में बताए गए पुण्यास्रव के सहारे से यहाँ तक पहुँचना होता है। आठवें अध्याय में तो केवल बन्ध का स्वरूप बताया। जो व्रत सातवें अध्याय में प्रवृत्ति रूप थे, वही निवृत्ति रूप नौवें अध्याय में बताए गए। जब प्रवृत्ति रूप होंगे तो निवृत्ति होगी। व्रतों के माध्यम से ही उस जीव के अन्दर वह शक्ति आती है, जो वह कर्म निर्जरा करने में अपने आपको समर्थ बनाता चला जाता है। इसलिए सम्यग्दर्शन पूर्वक जो व्रत लेता है, उसके लिए कभी भी पुण्य का जो आस्रव है, वह उसके लिए मोक्ष मार्ग में कभी बाधक नहीं होता, वह कभी संसार का कारण नहीं होता।

जिनदर्शन के अन्दर बने मिथ्यामार्गों से बचे, जिनवाणी के अवर्णवाद न करें

जो लोग पुण्य बन्ध को संसार का कारण बताकर के लोगों को विरति से ही विरति कराते हैं वे बहुत बड़ा जिनवाणी के साथ अन्याय करते हैं। यह बात आप लोग अच्छे ढंग से समझ ले तब आपको यह दसवें अध्याय में होने वाला जो केवल ज्ञान और मोक्ष की व्यवस्था है, यह आपको समझ में आएगी क्योंकि यह तो अब chapter पूर्ण होने वाला है। नौ तक तो हो चुके हैं...दसवाँ भी, मोक्ष में तो बहुत कम time लगता है। चाहूँ तो मैं आज ही पूरा कर दूँगा…पूरा करने को तो कभी भी हो जाएगा लेकिन अपने ज्ञान में भी कोई चीज आ जानी चाहिए। कम से कम इतना भी आ जाए कि जो लोग हमें भटकाते हैं, जो हम अज्ञानता में पड़े होते हैं, लोग तरह-तरह का हमें मिथ्याज्ञान पिलाते रहते हैं, कम से कम अगर हम उससे भी बच जाएँगे और जो हमें जिस तरह यह विधान बताया गया है, process बताई गई है, इस process को भी अगर हम श्रद्धा बना करके रखेंगे तो भी कम से कम हम इस भव में नहीं तो किसी न किसी भव में कुछ न कुछ achieve कर लेंगे। अगर हम सही line पर चलेंगे तो कुछ मिल जाएगा…line से भटक गए तो कुछ नहीं मिलेगा इसलिए संसार में मिथ्या मार्ग बहुत है। पहले तो मिथ्या मार्ग जिनदर्शन के बाहर होते थे अब तो जिनदर्शन के अन्दर ही मिथ्या मार्ग बहुत सारे शुरु हो चुके हैं। अगर आप उस तरीके की सावधानी नहीं रखेंगे तो आप फिर जिनदर्शन को प्राप्त करके फिर से भटक जाएँगे।

निर्जरा से मोक्ष प्राप्ति

उसी में यह बताया जाने वाला है कि भाई! अब जब इतनी निर्जरा हो गई...संवर-निर्जरा के माध्यम से मोक्ष मिलता है तो मोक्ष कैसे मिलता है? उस मोक्ष की प्राप्ति के लिए किस तरह से उसे पहले किन-किन कर्मों की निर्जरा कर लेनी पड़ती है, जिनके क्षय होने पर इस जीव को मोक्ष की प्राप्ति होती चली जाती है? वह यहाँ पर सूत्र में सांकेतिक रूप से कुछ कहा जा रहा है, उसी सूत्र को पहले पढ़ते हैं….

मोहक्षयाज्ज्ञान-दर्शनावरणान्तराय-क्षयाच्च केवलम्॥10.1॥

कर्मों के क्षय का क्रम

'केवलं' का मतलब है- केवलज्ञानं यानी केवलज्ञान। केवलज्ञान की प्राप्ति करने के लिए यहाँ पर उपाय बताया गया। **'मोहक्षयात्'** सबसे पहले तो मोह का क्षय होना चाहिए। ये दो पद है इसमें एक पद है मोह का क्षय होने से और दूसरा पद है- **'ज्ञानदर्शनावरणांतराय क्षयाच्च'** ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय कर्मों के क्षय से। ये दो पदों को यहाँ पर अलग-अलग विभक्ति के साथ तोड़ कर लिखा है। वह इसलिए लिखा है कि मोह का क्षय पहले होता है। उसके बाद में ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अन्तराय कर्मों का क्षय बाद में होता है। ऐसा नहीं है कि मोह और इन सब कर्मों का क्षय एक साथ हो जाता हो। एक साथ होता तो एक विभक्ति में पूरा लिख सकते थे, उसको तोड़ा गया। **'मोहक्षयात्'** यहाँ पर रुके हैं यानी हम मोह का क्षय करने के बाद भी थोड़ा रुक करके भी हम संसार में रह सकते हैं। उसके बाद में यह ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अन्तराय कर्मों के क्षय से उस जीव को केवलज्ञान की प्राप्ति होती है। यह जो क्रम है, इस क्रम के माध्यम से ही हम इस पूरी कर्म व्यवस्था को समझ सकते हैं।

सात कर्म प्रकृतियों के क्षय से क्षायिक भावों की उपलब्धि

मोह का क्षय जब होगा तो मोह के क्षय में आप जानते हैं, दो प्रकार के मोह बताए गए- एक दर्शनमोहनीय है और एक चारित्रमोहनीय है। दर्शनमोहनीय में सबसे पहले जब मिथ्यात्व और उसके साथ में अनन्तानुबन्धी कषाएँ और जो उस दर्शनमोहनीय की मिथ्यात्व के साथ में सम्यग्प्रकृति भी है या सम्यग्मिथ्यात्व भी है तो यह दर्शनमोहनीय की तीनों प्रकृतियाँ और अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ ये चार प्रकृतियाँ, इन सात प्रकृतियों का पहले क्षय होना जरूरी है। सबसे पहले जो मोक्ष मार्ग एकदम से पक्का बन जाता है, permanent कि हाँ! अब इसको जो है मोक्ष में ले जाने से कोई नहीं रोक सकता। सबसे पहले जो क्षायिक भाव पैदा होता है वह इन सात प्रकृतियों के क्षय से क्षायिक सम्यग्दर्शन की प्राप्ति रूप क्षायिक भाव उसको प्राप्त होता है। यही क्षायिक भाव उसके लिए नियामकता बना देता है कि अब इस जीव को तीन भव से ज्यादा नहीं लगेंगे।

क्षायिक सम्यग्दर्शन से मोक्ष की नियामकता

जब तक क्षायिक सम्यग्दर्शन नहीं होता तब तक उससे पहले भी वह बहुत पुरुषार्थ करता है। उपशम सम्यग्दर्शन हो जाता है, क्षयोपशम सम्यग्दर्शन होता रहता है। क्षयोपशम सम्यग्दर्शन असंख्यातों बार हो सकता है, छूट सकता है लेकिन संसार में उस उपशम सम्यग्दर्शन के माध्यम से भी उस जीवात्मा की एक limit बन जाती है कि वह अर्धपुद्गल परिवर्तन काल से ज्यादा अब इस संसार में नहीं रहेगा, जिसने एक बार भी उपशम सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लिया। वह अर्धपुद्गल परिवर्तन काल भी बहुत काल होता है, अनन्त काल है वह भी एक तरह का देखा जाए तो उसमें

भी सबसे ज्यादा उस संसार की जो अल्पता रह जाती है, वह तब रहती है जब वह क्षायिक सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लेता है। क्षायिक सम्यग्दर्शन को प्राप्त करने का नाम ही है कि उसने अभी दर्शनमोहनीय कर्म का क्षय कर लिया और यहीं से उसका मोक्ष मार्ग एक तरह से पक्का हो जाता है कि अब वह जीव कहीं नहीं भटकेगा या तो उसी भव में मोक्ष जाएगा या फिर तीसरे भव में मोक्ष जाएगा।

क्षायिक सम्यग्दर्शन प्राप्ति की गुणस्थान व्यवस्था

यह क्षायिक सम्यग्दर्शन होने पर सात कर्म प्रकृतियों का क्षय हो जाता है। सबसे पहले कितनी प्रकृतियों का क्षय होगा? सात कर्म प्रकृतियों का क्षय होगा। अब ये सात कर्म प्रकृतियों का क्षय सम्यग्दृष्टि जीव ही करेगा। अब वह सम्यग्दृष्टि जीव क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि जीव ही होगा जिसको वेदक सम्यग्दृष्टि भी कहा जाता है। वही जीव इन सात प्रकृतियों का क्षय कर सकता है और ऐसी सात प्रकृतियों का क्षय करने वाला वह जीव चौथे गुणस्थान वाला भी हो सकता है, पाँचवें गुणस्थान में भी हो सकता है, छटवें में भी हो सकता है और सातवें में भी हो सकता है। इन चारों गुणस्थानों में कोई भी जीव अविरत सम्यग्दृष्टि भी क्षायिक सम्यग्दर्शन प्राप्त कर सकता है। देशसंयमी भी पाँचवें गुणस्थान में यह क्षायिक सम्यग्दर्शन प्राप्त कर सकता है और कोई मुनि भी प्रमत्त-अप्रमत्त गुणस्थान में रह कर के भी क्षायिक सम्यकत्व की प्राप्ति कर सकते हैं। यह जो क्षायिक सम्यग्दर्शन की प्राप्ति है यही सबसे पहले कर्मों का क्षय हुआ है। **(15:18)**

class 02

148 प्रकृतियों में से मात्र 7 कर्मों का क्षय यहाँ सम्भव है

सबसे पहले जो कर्मों का क्षय होने का मतलब? अब आत्मा के अन्दर यह कर्म कभी भी दोबारा आएँगे नहीं...अत्यन्त रूप से उन आत्मा के अन्दर से कर्म का नाश हो जाना। क्षय का मतलब होता है- उस कर्म के बीज को ही हमने जला दिया जिससे कि कर्म की उत्पत्ति होती रहती थी। उस बीज को जलाने के बाद ही उस जीव के अन्दर अन्य कर्मों को क्षय करने की शक्ति आती है। सबसे पहले मोक्ष मार्ग में सात कर्म प्रकृतियों के क्षय से क्षायिक सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो जाती है। उसके बाद में चौथे, पाँचवें, छठवें, सातवें गुणस्थान में अन्य किसी भी कर्म प्रकृति का क्षय नहीं हो सकता है। अब क्षय का मतलब और निर्जरा का मतलब ध्यान में रखना। निर्जरा होना अलग बात है और कर्म का पूर्णतया क्षय हो जाना अलग बात है। पूर्णतया जो क्षय है, वह केवल इन चार गुणस्थानों में केवल इन्हीं कर्मों का हो सकता है। जब हमारे पास बहुत सारे कर्म हैं, कर्म की प्रकृतियाँ तो 148 हैं। कितनी हैं? उन सब कर्मों का क्षय करना है। अभी कितने हुए हैं? अभी तो सात हो गए, दिमाग में तो ही गए हैं। अभी आपके पास में जितने कर्म बचे, अब यह कर्मों का जो क्षय होगा, वह कर्मों का क्षय आगे के गुणस्थानों में होगा।

नौवें गुणस्थान में 36 कर्म प्रकृतियों का क्षय

सातवें गुणस्थान में भी विशुद्धि बढ़ाएगा, श्रेणी के योग्य परिणाम करेगा, अधःकरण परिणाम शुरू हो जाएँगे। जब क्षपक श्रेणी पर चढ़ेगा, उस क्षपक श्रेणी के परिणाम उसके अन्दर आएँगे, अपूर्वकरण परिणाम आएँगे, उसमें भी विशुद्धि बढ़ाता चला जाएगा। पाप कर्म का अनुभाग कम होता चला जाता है, घिसता चला जाता है लेकिन नाश अभी किसी कर्म का नहीं होता। नौवें गुणस्थान में जाकर के सबसे ज्यादा फिर वह कर्मों का क्षय कर पाता है। नौवें गुणस्थान में नौ भाग बन जाते हैं। नौ part हैं मतलब नौ पड़ाव हैं। उन नौ पड़ाव में वह नौ बार अलग-अलग कर्मों का क्षय कर लेता है। कुल मिलाकर के 36 कर्मों का क्षय नौवें गुणस्थान में उसके बाद होता है। कितने? छत्तीस।

13 नामकर्म एवं 3 दर्शनावरण की कर्म प्रकृतियों का क्षय एक साथ होता है

अब उस नौ भाग में जो सबसे पहले वह कर्म का क्षय करता है तो उसके लिए 16 कर्म प्रकृतियों का क्षय सबसे पहले करना हो जाता है। उन 16 कर्म प्रकृतियों में देखा जाए तो 13 जो कर्म प्रकृतियाँ हैं, वह तो नाम कर्म की होती हैं और बाकी की जो है तीन कर्म प्रकृतियाँ हैं वे दर्शनावरणीय कर्म की होती हैं, जिन्हें हम निद्रा-निद्रा, प्रचला-प्रचला और स्त्यानगृद्धि तीन कर्म कहते हैं। इन तीन कर्म प्रकृतियों का नाश और उसके साथ में 13 नाम कर्म की प्रकृतियों का नाश वह करता है...16 कर्मों का नाश एक साथ करता है। उन नाम कर्म की प्रकृतियों में वैसे तो होना तो मोह का नाश चाहिए था लेकिन ये नाम कर्म की प्रकृतियाँ भी उसके साथ में पहले आ जाती हैं तो ये वे प्रकृतियाँ होती हैं जिनका कि अब उसे आगे कुछ भी होना नहीं है।

कर्म प्रकृतियों का विश्लेषण

नाम कर्म की ऐसी प्रकृतियाँ…जैसे नरक गति...नरक गत्यानुपूर्वी, तिर्यंच गति...तिर्यंच गत्यानुपूर्वी। इसके बाद में उसके लिए आतप है, उद्योत है, स्थावर है, सूक्ष्म है, साधारण है, ये सभी कर्म प्रकृतियों का नाश हो जाता है। इसके अलावा जो उसके लिए जातियाँ हैं, एक इन्द्रिय जाति, दो इन्द्रिय जाति, तीन इन्द्रिय जाति और चार इन्द्रिय जाति, ये 13 कर्म प्रकृतियाँ हो गई...आप गिन लेना, हम तो गिन चुके। ये कितनी हो गई? तेरह, इन तेरह कर्म प्रकृतियों का और जो दर्शनावरणीय की तीन बताई थी- निद्रा-निद्रा, प्रचला-प्रचला और स्त्यानगृद्धि, इन 16 प्रकृतियों को वह नौवें गुणस्थान में पहले एक साथ क्षय करता है।

कर्म क्षय का दूसरा पड़ाव

फिर उसके बाद में दूसरा part आएगा, दूसरा पड़ाव आएगा, विशुद्धि बढ़ाता चला जाएगा। अब कुल मिलाकर के काल तो बहुत सूक्ष्म होता है, अन्तर्मुहूर्त ही काल होता है लेकिन उस अन्तर्मुहूर्त में भी समझाने के लिए हमें नौ उसके भाग बताए गए हैं। दूसरे भाग में फिर वह जो अप्रत्याख्यानावरण और प्रत्याख्यानावरण, इन आठ कर्म प्रकृतियों का एक साथ नाश करता है। अनन्तानुबन्धी का तो हो ही चुका पहले, अब इनका नम्बर आता है। इनके ऊपर हथौड़ा

चलता है तो फिर इन आठ कषायों का एक साथ क्षय होता है, वह भी नौवें गुणस्थान में होता है। फिर इसके बाद में यह अप्रत्याख्यान का हो गया, प्रत्याख्यान का हो गया। इधर पहले 16 कर्म प्रकृतियों का अलग हो चुका है।

मोहनीय कर्म प्रकृतियों के क्षय का क्रम

अब नम्बर आता है- इसके बाद में मोहनीय कर्म की अन्य प्रकृतियों का, जो चारित्रमोहनीय कर्म की ये जो नोकषायें बची हुई हैं। उन नोकषायों में पहले वह नपुंसक वेद और स्त्री वेद का क्षय करता है, दो प्रकृतियाँ उस समय पर। फिर उसके बाद में हास्य आदि जो छह नोकषाएँ होती है उनका क्षय करेगा और उनको क्षय करने के लिए उनको पुरुष वेद में डालेगा। फिर पुरुष वेद का क्षय करेगा और पुरुष वेद को क्षय करने के लिए पुरुष वेद को संज्वलन के क्रोध में डालेगा। संज्वलन के क्रोध का क्षय करने के लिए उसको मान में डालेगा। संज्वलन मान का फिर केवल अस्तित्व रह जाएगा। फिर संज्वलन मान को भी क्षय करने के लिए उस मान की जितनी भी कषाएँ, जितना भी कर्म समूह है, उसको माया में डालेगा। यह **'आनुपूर्वी संक्रमण'** कहलाता है। इस संक्रमण के माध्यम से इनका एक-एक करके क्षय होता है और फिर माया के बाद में उसको लोभ में डाल देता है। वहाँ पर संज्वलन की क्रोध, मान, माया, इनका और बादर लोभ का, इतना क्षय नौवें गुणस्थान में हो जाता है। अभी सूक्ष्म लोभ बचा रह जाता है। वहाँ पर इसके लिए एक तरह से इतने काम, इतने कर्म प्रकृतियों के नाश इन पड़ावों में हो गए। ये सब अलग-अलग भाग बन जाते हैं।

नौवें गुणस्थान की 36 कर्म प्रकृतियाँ

पहले भाग में उसने 16 कर्म प्रकृतियों का नाश कर लिया, दूसरे भाग में आठ कषायों का नाश कर लिया, तीसरे भाग में फिर उसने पहले नपुंसक वेद का नाश किया। फिर चौथे भाग में स्त्री वेद का नाश किया, पाँचवें भाग में छह नोकषायों का नाश किया,छठे भाग में - पुरुष वेद, सातवें भाग में क्रोध , 8th में मान , 9th में माया का। मतलब यह है कि पुरुष वेद का और क्रोध का, इनका वह आनुपूर्वी संक्रमण के माध्यम से क्रम-क्रम से नाश करता है। ऐसे करके वह इतनी कर्म प्रकृतियों का नौवें गुणस्थान में क्षय कर लेता है। अब ये कितनी कर्म प्रकृतियाँ हो गई? नौवें गुणस्थान की 36 कर्म प्रकृतियाँ बताई थी। हो गई कि नहीं? गिन लो।

गणना की पुनरावृत्ति

16 एक थी, 16 और आठ ... 24, फिर दो वेद ... 26 और फिर जो है छह नोकषाएँ... 26 और छह.... 32 और क्रोध मान माया लोभ... 32 और चार .. 36, इस तरह से जो है इन 36 कर्म प्रकृतियों का नाश उसके लिए सत्ता के रूप में इनका क्षय हो जाना। क्रोध मान माया एक बीच में पुरुष वेद छोड़ दिया, लोभ अभी छोड़ देना है, तब 36 बनेंगे क्योंकि लोभ का नाश तो सूक्ष्म साम्पराय, दसवें गुणस्थान में होना है। वहाँ पर एक कर्म प्रकृति का ही नाश होगा दसवें गुणस्थान में तो 36 कर्म प्रकृतियों का नाश इस तरह से नौवें गुण स्थान में, फिर एक कर्म प्रकृति का नाश

सूक्ष्म लोभ का कहाँ पर? दसवें गुणस्थान में! 36 और एक कितनी हो गई 37 और सात पहले हो चुकी है। 37 और सात कितनी हो गई? 44! अब हम कहाँ पहुँच गए? 10वें गुणस्थान में पहुँच गए। 11वें में कुछ नहीं होता है।

12वें गुणस्थान की व्यवस्था

अब जब वह जीव 12वें गुणस्थान में पहुँचेगा तो 12वें गुणस्थान में भी दो भाग बनते हैं। एक तो बिल्कुल चरम समय कहलाता है, एक द्विचरम समय कहलाता है मतलब last का और second last का। जो second last का समय होता है उसमें केवल दो कर्म का क्षय होता है- निद्रा का और प्रचला का और जो last point है, last मतलब चरम समय है, उस 12वें गुणस्थान के चरम समय में पाँच ज्ञानावरण कर्मों का, कितने? पाँच ही होते हैं और पाँच अन्तराय कर्मों का और दर्शनावरणीय कर्म बचे केवल चार। बाकी की पाँच निद्राएँ तो नष्ट हो चुकी। कितने हो गए? पाँच-पाँच .. 10 और चार ...14 और निद्रा, प्रचला ये दो...16। सोलह कर्मों का नाश होता है 12वें गुणस्थान में और उसमें भी अगर और अलग-अलग देखोगे तो द्विचरम समय में दो प्रकृतियों का और चरम समय में 14 कर्म प्रकृतियों का नाश होता है। अब पहले कितनी हो चुकी थी? 44, अब 44 में जोड़ो, ये कितने हो गए? 16? कितनी हो गई? 60 हो गई।

कर्मों की 63 प्रकृतियाँ

एक बार किसी ने पूछा था...**'कर्मन की 63 प्रकृति नास'** महाराज! 63 प्रकृतियाँ कौन-सी होती हैं? तब मैंने कहा था जब समय आएगा तब बताऊँगा। जब कोई भी प्रश्न है, जब तक समझने का time न हो तो कैसे समझाया जाए? समय आएगा जब अपने समझ में आता है। अब आपको समय मिल रहा है। अब समझो, कितनी प्रकृतियाँ नाश करके केवलज्ञानी बनते हैं? 63 प्रकृतियों का। अभी कितनी हुई? 60 हुई। तीन जो आयु हैं, उनका नाश नहीं करना पड़ता है क्योंकि जो चरमशरीरी जीव होते हैं, उनके लिए जो तीनों आयु हैं उनका अस्तित्व होता ही नहीं है। आयु का बन्ध होना ही नहीं है जो चरम शरीरी है- नरक आयु, तिर्यंच आयु और देव आयु। इन तीनों आयु का नाश अपने आप हो ही गया तो इन्हें करना नहीं पड़ता। इसलिए, केवल, सुनो एक बात ढंग से, जो लोग काल लब्धि, काल लब्धि चिल्लाते रहते हैं और बैठे-बैठे ऊँघते रहते हैं घरों में गद्दों पर, वे लोग सुने कि कभी भी कर्म प्रकृतियों का नाश बिना प्रयत्न के नहीं होता है। केवल अगर बिना प्रयत्न के कोई कर्म प्रकृतियों का नाश होता है तो मात्र इन तीन आयु कर्मों का नाश होता है जिसके लिए हमें कोई नाश के लिए प्रयत्न नहीं करना पड़ता है। बाकी 60 कर्म प्रकृतियों में आपको जन्म-जन्म लग जाएँगे, इतना पसीना आएगा कि सारा पसीना सूख जाएगा, आना ही बन्द हो जाएगा।

पुरुषार्थ से ही कर्मों का क्षय सम्भव है

जिस चरम भव में आपको केवलज्ञान होना होगा, फिर उस भव में फिर आपको शरीर में पसीना मिलेगा ही नहीं, इतना पसीना सूख जाएगा। पसीना क्यों सूख गया? जिन्होंने अपना पहले इतना पुरुषार्थ किया है, इतना पसीना

निकाल दिया है कि अब उन्हें ऐसा शरीर मिला कि जिसमें पसीना ही नहीं आता। तब जाकर के केवलज्ञान की प्राप्ति होती है। इसलिए काल लब्धि कह कर के, काल लब्धि का इन्तजार करने वाले लोग प्रयास करें, प्रयत्नसाध्य इन प्रकृतियों का क्षय बताया गया है...effort से होता है, without effort नहीं होता है। without effort तो केवल जो है तीन कर्मों का नाश है जिसके लिए हमें कोई पुरुषार्थ करना ही नहीं है, वे हैं- तीन आयु। बाकी जो मनुष्य आयु है उसका नाश तो बाद में हो जाएगा। ऐसे ये 63 प्रकृतियाँ मैंने आपको गिना दी। इन 63 प्रकृतियों के नाश से उस जीव को 12वें गुणस्थान का जैसे ही अन्त होगा, 12वें गुणस्थान का जो चरम समय होगा, वही चरम समय पर ज्ञानावरण आदि इन कर्म प्रकृतियों का क्षय होगा और एक ही समय में, जैसे ही उन कर्मों का क्षय हुआ, उस आत्मा के अन्दर वह केवलज्ञान का साम्राज्य प्रकट हो जाएगा। अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन मय वह आत्मा जगत के सब पदार्थों को देखने में समर्थ वह आत्मा बन जाएगा। यह केवलज्ञान की प्राप्ति, 13वें गुणस्थान उसी का नाम है।

अन्तरंग प्रक्रिया होने पर गुणस्थान उद्घाटित होता है

गुणस्थान में पहुँचने से केवलज्ञान नहीं होता है, यह तो समझाने के लिए है कि तेरहवें गुणस्थान में केवलज्ञान होता है...गुणस्थान में केवलज्ञान नहीं होता है। केवलज्ञान हो जाता है तो उसको कहा जाता है-यह तेरहवाँ गुणस्थान हो गया। समझाने के तरीके होते हैं। अगर आप भीतर के गुणों को पहले सामने रखोगे तो गुणस्थान बाद में आएगा और गुणस्थानों के माध्यम से समझोगे तो गुणस्थान की मुख्यता रहेगी तो यह कहना पड़ेगा कि 13वें गुणस्थान में केवलज्ञान होता है। वस्तुतः देखा जाए तो 13वें गुणस्थान में केवलज्ञान नहीं होता, केवलज्ञान होने पर 13वां गुणस्थान आता है। उस गुणस्थान का नाम है? गुणस्थान तो कोई चीज तो है नहीं है, कोई सीढ़ियाँ लगी हो कि आप 13वीं सीढ़ी पर पहुँच गए तो आपको केवलज्ञान हो जाएगा। अगर आपके अन्दर वह प्रक्रिया घटित हो गई तो इसका मतलब है- आप 13वें गुणस्थान में पहुँच गए। यह भी तो सीख लो! कोई श्रेणी का मतलब लोग समझते हैं- सीढ़ियाँ लगी हैं.... क्षपक श्रेणी पर चढ़ गए थे, फिर उसके पार लग गए। उपशम श्रेणी पर गए थे, गिर पड़े...जैसे गिर पड़े मतलब कहीं पटक गए। किसी के कुछ मुँह टूट गया ऐसे कि तो यह कुछ भी नहीं होता है। यह तो सिर्फ समझाने का तरीका है। श्रेणी का मतलब यह है- ऊपर-ऊपर चढ़ते चले जाना। श्रेणी का मतलब है- आगे-आगे बढ़ते चले जाना। एक श्रेणी ऐसी है जिस पर आगे बढ़ने के बाद में लौटना पड़ता है, एक श्रेणी ऐसी है जिस पर बढ़ते चले जाते हैं, उस पर कभी फिर लौटना नहीं होता है, बस! इतना-सा खेल है।

8वें और 11वें गुणस्थान में किसी कर्म प्रकृति का क्षय नहीं

यह जो पूरा का पूरा process है, इस process में आप देखेंगे कि आपके लिए वर्तमान में कुछ भी कर्म प्रकृतियों का पूर्ण रूप से क्षय करने के लिए कहीं पर कोई सौभाग्य अभी पंचम काल में नहीं है क्योंकि बाकी की सात कर्म प्रकृतियों को छोड़कर के जितनी भी बची हुई कर्म प्रकृतियाँ हैं, उन सबका तो क्षय श्रेणी में होना है। 9वें गुणस्थान में हो रहा है, 12वें गुणस्थान में हो रहा है, 10वें गुणस्थान में हो रहा है...8वें गुणस्थान में भी कोई क्षय नहीं है और 11वें

में भी कोई क्षय नहीं है। आप यह भी ध्यान में रख ले कि श्रेणी में भी आठवें गुणस्थान में और ग्यारहवें गुणस्थान में कोई कर्मों का क्षय नहीं होता है। केवल जो है नौवें गुणस्थान में, दसवें में एक और बारहवें में सोलह और नौवें में छत्तीस, बस इतना कर्मों का क्षय है और ये सब श्रेणी में।

शुक्ल ध्यान की अग्नि से ही श्रेणी में कर्मों का क्षय

क्षपक श्रेणी का मतलब सिर्फ शुक्ल ध्यान की अग्नि के माध्यम से होता है। कौन सी अग्नि चाहिये? शुक्ल ध्यान की तीव्र अग्नि के माध्यम से ये सब कर्मों का क्षय होगा। इधर धर्म ध्यान से अगर कुछ कर पाओगे तो वह क्या होगा? वह धर्म ध्यान से आपके अन्दर दर्शनमोहनीय कर्मों का क्षय हो जाएगा। दर्शनमोहनीय कर्म का क्षय ही केवल धर्म ध्यान से होता है। चौथे से लेकर के सातवें गुणस्थानों में रहने वाले जीव! अब ये भी गुणस्थान कब बनेंगे? जब आपके अन्दर सम्यग्दर्शन का परिणाम आएगा तो गुणस्थान कहलाएगा। 30:24 ऐसा नहीं है कि चौथे गुणस्थान में पहुँच गए तो हम सम्यग्दृष्टि हो गए। कुछ लोग जो है अपने आप को...मैं तो सम्यग्दृष्टि हूँ, मैं ऐसा क्यों करूँ? **(30:32)**

class 03

सम्यग्दृष्टि कौन?

आपको पैमाना कैसे पता पड़ गया कि आप सम्यग्दृष्टि है? सम्यग्दृष्टि जीव के लिए कभी भी ऐसा घमण्ड नहीं आता कि मैं सम्यग्दृष्टि हूँ। यह भी एक अहं है, इस तरीके का कोई अहं भाव नहीं होता। सम्यग्दृष्टि जीव तो बड़ा निर्मल परिणाम वाला होता है। अगर उसके अन्दर सम्यकत्व का भाव आएगा तो उसके अन्दर अपने आप उसको नापने के लिए कहा जाएगा। हाँ! यह चौथे गुणस्थान में रहने वाला जीव है। फिर वह व्रत ले लेगा तो पाँचवें गुणस्थान वाला जीव है। फिर और महाव्रत ले लेगा तो छटवें-सातवें गुणस्थान वाला जीव है।

धर्म ध्यान है शुभोपयोग

इन गुणस्थानों में केवल धर्म ध्यान ही होता है। क्या होता है? धर्म ध्यान! जब तक धर्म ध्यान होता है तब तक शुभोपयोग ही होता है। क्या होता है? इस शुद्धोपयोग के नाम से भी लोग इतना गुमराह कर रहे हैं आज जमाने के अन्दर कि शुद्धोपयोग करो, शुद्धोपयोग करो, शुद्धोपयोग से ही कर्म की निर्जरा है। शुद्धोपयोग से ही मोक्ष है। आपको कहाँ से मोक्ष हो रहा है? कोई सिद्धान्त की प्रक्रिया तो देखो, कहाँ से मोक्ष हो रहा है? शुद्धोपयोग का मतलब है- जब आपका उपयोग शुद्ध हो जाए। उस समय पर जो आपके उपयोग की परिणति होगी, उसका नाम शुद्धोपयोग है। उपयोग शुद्ध कब होगा? जब आपके अन्दर सातवें गुणस्थान से ऊपर उठने की प्रवृत्ति होगी, जब कषाएँ बिल्कुल मन्द हो जाए, दबने लग जाए या क्षय होने की प्रक्रिया शुरू हो जाए, तब शुद्धोपयोग की प्रक्रिया शुरू होती है। उससे पहले जो धर्म ध्यान की प्रक्रिया है, वह सब शुभोपयोग के साथ ही होगी। क्योंकि आप देखोगे, चौथे गुणस्थान में,

पाँचवे में, छटवें-सातवें में राग के साथ ही प्रवृत्ति रहती है। राग के साथ जब तक प्रवृत्ति रहती है तब तक वह शुभोपयोग का भाव ही रहता है।

शुद्धोपयोग क्या है?

केवल आत्मा-आत्मा करने से शुद्ध उपयोग नहीं हो जाता। जहाँ पर सिर्फ आत्मा का ध्यान किया जाता है, आत्मा का संवेदन किया जाता है और कुछ नहीं किया जाता, वह शुद्धोपयोग शुक्ल ध्यान में अष्टम आदि गुणस्थानों में होता है। उस शुद्धोपयोग की प्राप्ति करने के लिए धर्म ध्यान होता है। उसने अभी आत्मा को उपादेय बनाया। धर्म ध्यान में भी ऐसा नहीं है कि उसका आत्मा के अन्दर कोई श्रद्धान नहीं है या कोई उसे आत्मा का ज्ञान नहीं है। धर्म ध्यान में भी, शुभोपयोग में भी, वह आत्मज्ञानी ही होता है। आत्मा का श्रद्धान भी है, आत्मा का ज्ञान भी है और आत्मा का ही आचरण कर रहा है। आत्मा के लिए ही आचरण कर रहा है तो वह सब आचरण धीरे-धीरे जब केवल आत्मा के लिए हो जाए और कोई चीज के लिए न हो तो वह शुक्ल ध्यान की, शुद्धोपयोग की स्थिति बनती है। ऐसी स्थिति में पहुँचने के बाद में उस जीव के लिए स्वतः उन कर्मों का क्षय अपने पुरुषार्थ से होता रहता है। लेकिन अपने अन्दर उन कर्मों का क्षय पहले से करने के लिए धर्म ध्यान जो करना पड़ेगा, वह धर्म ध्यान तो पुरुषार्थपूर्वक ही होता है।

धर्म ध्यान पुरुषार्थपूर्वक होता है

अब आप देखें…चौथे-पाँचवें आदि गुण स्थानों में सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के लिए भी आपको काल लब्धि का इन्तजार नहीं करना है। अगर क्षायिक सम्यग्दर्शन नहीं हो रहा है तो हम क्या करें महाराज? बैठे रहें क्या? बैठे नहीं रहो, कुछ न कुछ करते रहो। कुछ करोगे तो कुछ होगा, कुछ कदम बढ़ाओगे तो कुछ कहीं पहुँचोगे। कुछ नहीं करोगे तो कुछ नहीं होगा, यह सीधा सिद्धान्त है, जमाने का सिद्धान्त है। अगर आपको कुछ करना है तो आज भी उपशम सम्यग्दर्शन, क्षयोपशम सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के परिणाम होते हैं। इन परिणामों के लिए किसी भी तरह का पुरुषार्थ करने के लिए आपको तैयार रहना पड़ेगा और इस तरह के पुरुषार्थ करने के लिए आपकी आज भी पंचम काल में कोई मनाही नहीं है।

पंचम काल का पुरुषार्थ

मतलब कि पंचम काल में भी आप पुरुषार्थ इतना कर सकते हैं कि अपने कर्मों को दबा सकते हैं। कौन से कर्म? दर्शनमोहनीय कर्म की जो प्रकृतियाँ हैं, अनन्तानुबन्धी कषाय की प्रकृतियाँ, इनको दबाएँ। इसका जो पुरुषार्थ करेंगे, यही पुरुषार्थ आपके लिए उपशम सम्यग्दर्शन प्राप्त कराएगा, इसी से क्षयोपशम सम्यग्दर्शन बनेगा। अगर यह भी हो गया तो यह भी आपके मोक्ष मार्ग की शुरुआत हो गई और इस तरह का पुरुषार्थ करने के लिए भी बस आपको मिथ्यात्व से दूर होना, अनन्तानुबन्धी कषाय की जो कषायात्मक परिणति है, उससे अपने परिणामों को बचाना और जितना भी जिनेन्द्र भगवान के द्वारा कहा हुआ सिद्धान्त है, इसमें अपनी रुचि बढ़ा करके रखना, मन लगा करके

रखना। यह मन अगर इसमें लगा रहेगा तो धीरे-धीरे यही पुरुषार्थ आपके अन्दर उपशम सम्यग्दर्शन, क्षयोपशम सम्यग्दर्शन की प्राप्ति का कारण बन जाएगा। अगर यह मन लगा रहा, सम्यग्दर्शन बना रहा तो फिर वही किसी भव में आपके लिए क्षायिक सम्यग्दर्शन का कारण बनेगा।

धैर्य धारण करें

लम्बा process है, घबराने वालों को कभी कुछ नहीं मिलता है लेकिन जो व्यक्ति यह नहीं देखते हैं कि हमें 50 किलोमीटर जाना है कि 100 किलोमीटर जाना है। जो व्यक्ति यह देखेंगे हमें 100 किलोमीटर जाना है, 100 किलोमीटर इतना लम्बा होता है! हम नहीं जा सकते, वे कभी नहीं जा सकते। लेकिन जिनको सिर्फ चलना आता है, चल रहे हैं। आप दो-दो सौ किलोमीटर की driving करके आ जाते हो, कैसे आ जाते हो? अगर घर पर बैठे सोचोगे, 200 किलोमीटर है भाई! दिल्ली से ऋषिकेश। मुजफ्फरनगर कितना है? 120 किलोमीटर है। आप यह सोचोगे 120 किलोमीटर इतना बड़ा होता है तो आप कभी नहीं आ सकते। लेकिन जब आप चलना शुरू कर देते हो तो रास्ते पीछे होते चले जाते हैं, हम आगे बढ़ते चले जाते हैं। ठीक यही मोक्ष मार्ग पर करना होता है, बस चलते जाओ। जो चलता जाएगा, कुछ न कुछ करता जाएगा। उसके लिए आगे-आगे का रास्ता, आगे-आगे का सोपान मिलता जाएगा, सब पीछे होता चला जाएगा।

पुण्य कर्म सहयोगी हैं

अगर आप यह सोच करके बैठोगे कि क्षायिक सम्यग्दर्शन कब होगा? कौन जन्म में होगा? बहुत बड़ा काम है, यह सब अपने बस का काम नहीं है। कैसे केवलज्ञान होता है? इतने कर्मों का क्षय करना, इतना शुक्ल ध्यान करना, इतना तप करना, यह हमारे बस का नहीं है, तो आपके बस में सब कुछ है। केवल आपको अपना मन बनाना है। कुछ आप करो, कुछ कर्म करेंगे। दोनों मिलकर के सब कुछ हो जाएगा। कर्म में भी कौन से कर्म? जब आप कुछ करने की इच्छा करोगे तो फिर आपको जो पुण्य कर्म का बन्ध होगा वही पुण्य कर्म आपका आगे-आगे सहयोग करेंगे। वही आपको सही line पर ले जाएँगे, अच्छा जन्म दिलाएँगे, अच्छी योग्यता दिलाएँगे, अच्छे भाव पैदा करेंगे, अच्छे ज्ञान आदि की शक्तियाँ पैदा करेंगे। कौन? उन कर्मों के जो अभाव से जो पुण्य कर्म मिलते हैं, वे पुण्य कर्म से सब चीजें मिलती है। इसलिए वह पुण्य कर्म, पाप कर्म का विरोधी हो जाता है, पुण्य कर्म आपका सहयोगी बन जाता है। विरोधी किसका हो जाता है? पाप का! क्योंकि आपने अपने अन्दर एक ऐसा कर्म पैदा कर लिया जो अपने ही पाप का नाश करने के लिए था। इस तरह से यह पूरी की पूरी प्रक्रिया भीतर की भीतर चलती रहती है।

निर्मल परिणामों के साथ धर्म ध्यान में रत रहें

जो व्यक्ति अपने शान्त परिणामों से, भगवान जिनेन्द्र देव के बताए हुए इन सिद्धान्तों का चिन्तन-मनन करते हुए अपना दिमाग, अपना धर्म ध्यान में पूरा चौबीसों घण्टे निकालते हैं, वह कुछ न कुछ भीतर-भीतर

टुक-टुक-टुक-टुक-टुक-टुक करते रहते हैं। उसी से जो है कुछ न कुछ तो झड़ता ही रहता है। वह झड़ते-झड़ते-झड़ते-झड़ते एक दिन जब ऐसा झड़ जाएगा…सात प्रकृतियों का क्षय हो गया, क्षायिक सम्यग्दर्शन हो गया तो जो बगल में खड़ा होगा वह कहेगा…भाई! कैसे हो गया? इतनी जल्दी कैसे हो गया? वह कहेगा इतनी जल्दी नहीं हो गया, यह बहुत जन्म-जन्म से करते चले आ रहे थे तब हुआ है।

आत्म कल्याण की भावना के साथ सदैव जागृत रहें

हर चीज समय पर होती है, समय साध्य होती है और पुरुषार्थ साध्य होती है। इसलिए इस पूरे मोक्ष मार्ग की प्रक्रिया में जब केवलज्ञान की प्राप्ति की बात कही जाती है तो आचार्य कहते हैं...प्रयत्न साध्य कर्मों का क्षय और अप्रयत्न साध्य या अयत्न साध्य कर्मों का क्षय। 63 प्रकृतियों में आप यह दिमाग में रख लो केवल तीन प्रकृतियाँ हैं जो बिना पुरुषार्थ के क्षय हो जाती है। इनके लिए पुरुषार्थ नहीं करना है बाकी 60 प्रकृतियों का क्षय यत्न साध्य कहा गया है, पुरुषार्थ करना है। काल लब्धि के क्षय में बैठे रहोगे, देखते-देखते तो कभी नहीं कुछ होने का तो इतना यह पुरुषार्थ होने के बाद में ये सब चीजें उपलब्ध होती हैं। इसलिए जीवों को भीतर से कभी भी सोना नहीं चाहिए, भीतर से जागृत रहना चाहिए। जो व्यक्ति अपनी आत्मा का हित चाहते हैं, अपने आत्मकल्याण की भावना रखना चाहते हैं, उन्हें हमेशा इस बात की जागृति रखनी चाहिए कि हमें वर्तमान में चाहे कुछ उपलब्ध हो या न हो लेकिन हम इन जिन शास्त्रों में बताए गए तत्त्वों पर श्रद्धा कर ले, बस!

निरन्तर चिन्तन करने से श्रद्धान दृढ़ होगा

यह जो आपको पूरा सम्यग्दर्शन से लेकर के यहाँ तक पूरा सम्यग्चारित्र तक जो भी वर्णन किया गया या यूँ कहे पूरा पहले अध्याय से लेकर के नौ अध्याय तक का वर्णन किया गया, इसे आप बार-बार सुनो, इस पर श्रद्धा करो। जितना आप सुनोगे, आपके विचारों में आएगा। जितने विचार आपके बार-बार उसी चीज में लगेंगे, उतनी आपके अन्दर श्रद्धा की परिणति आएगी। श्रद्धा अगर एक बार बन गई आपकी कि इन तत्त्वों का जो हमें ज्ञान दिया गया है, वह ज्ञान इसी प्रकार का है, इसके अलावा और कुछ भी नहीं है। यही तत्त्व की श्रद्धा आपके अन्दर मजबूत सम्यग्दर्शन की एक नींव डाल देगी और कोई उपाय नहीं है। जो भी व्यक्ति आज सुनते हैं, बहुत सारे पढ़े-लिखे लोग अपने आत्म कल्याण करने की भावना रखते हैं, इच्छा करते हैं...क्या करें? बहुत सारा बाहर देखोगे तो दुनिया की परिस्थितियाँ विपरीत मिलेंगी लेकिन भीतर देखना शुरू करोगे तो सब अनुकूल है। भीतर क्या दिक्कत है? बाहर तो चलता ही रहेगा।

बाहरी परिस्थितियों में विचलित न हों

दुनिया है, कहीं कोरोना-एक आ रहा है, फिर कोरोना-दो आ रहा है फिर तीन आ रहा है, vaccine आ रही है, नहीं आ रही है। इन सब बातों में क्या होने जाने वाला है? कितने लोग निपट गए, कितने लोग निपटते रहेंगे, किनको रोक

लोगे, क्या कर लोगे? कुछ अपना कर लो। इसी में आपकी भलाई है और यही काम करने वाला जो होता है, वही व्यक्ति इस संसार से ऊपर उठ जाता है। घर बैठे-बैठे भी केवल आप इन तत्त्वार्थ सूत्र में बताए गए तत्त्वों का श्रद्धान करने के लिए, इस ज्ञान को अपने अन्दर गाढ़ा बनाओ। इतना कि वह अपने भीतर बैठ जाए। भगवान जिनेन्द्र देव की कही हुई बात एक भी अन्यथा नहीं लगे। जो कहा है बिल्कुल 100 percent सही है। दुनिया इधर की उधर हो जाए लेकिन हमारा श्रद्धान कभी नहीं डगमगाए क्योंकि आगे-आगे जितना विज्ञान आएगा, वह सब आपके श्रद्धान को डगमगाएगा।

विज्ञान या अज्ञान ?

विज्ञान कहेगा, हम मंगल ग्रह पर जा रहे हैं। विज्ञान कहेगा हमने चन्द्रमा पर plots खरीद लिए हैं, जगह देख ली है, तुम भी उसमें invest करो। यह जितने भी फालतू की बातें हैं, ये सब अज्ञानी लोगों के लिए हैं। न कभी ऐसा कुछ हुआ है न कुछ होने वाला है। आगे-आगे विज्ञान आने वाला है...कह रहा है विज्ञान कि ऐसा कुछ system तैयार हो जाएगा कि आप जो है बिल्कुल अमर हो जाओगे, eternal हो जाओगे। मतलब आपको मरना नहीं पड़ेगा, ऐसी आपके लिए दवाई बनाई जाएगी। ये सब फालतू की बातें जितनी भी लोगों के लिए अच्छी लगती हैं, वह सबको जिनको कुछ भी तत्त्व का श्रद्धान नहीं है, ज्ञान नहीं है।

पंचम काल में केवलज्ञान का बीज: उपशम सम्यग्दर्शन

आप तत्त्व का ज्ञान रखो, अपनी श्रद्धा मजबूत बनाओ, इसी से यह केवलज्ञान का बीज पड़ेगा। पंचम काल में भी केवलज्ञान का बीज क्या है? उपशम सम्यग्दर्शन। एक तरफ वह supreme point देखो केवलज्ञान और आज की शुरुआत देखो तो कहाँ से होगी? उपशम सम्यग्दर्शन से। बस इस point को देखो और इसी के माध्यम से उस लम्बी यात्रा को शुरू करो। आज के लिए इतना पर्याप्त है। मोक्ष तो होना ही है एक-दो-तीन दिन में पूरा मोक्ष भी हो जाएगा लेकिन समझने की चीज है कि मोक्ष होने से पहले हमें भी कुछ करना है कि नहीं करना है? यह पुरुषार्थ इतना है।